nwda.gov.in

पहाड़ खोदकर सहेजा पानी, दूर हुई वर्षों की पेयजल समस्या

जागरण विशेष

हिमाचल प्रदेश की सिकांदर पंचायत ने सरकारी योजनाओं के जरिये संवार दिए प्राकृतिक जलस्रोत

रणवीर ठाकुर • जागरण

हमीरपुर: इच्छाशक्ति हो और हालात को बदलने का जज्बा तो क्या कुछ नहीं हो सकता है। हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर जिले के बमसन क्षेत्र में कभी पानी की बहुत समस्या थी। एक समय था जब यहां लोग अपनी बेटियों की शादी इसलिए नहीं करना चाहते थे, क्योंकि यहां पर पानी का बहुत संकट रहता था, लेकिन इसी क्षेत्र में पड़ने वाली सिकांदर पंचायत ने इन हालात को बदलने की ठानी। इसके बाद सरकारी योजनाओं की मदद से पंचायत ने गांव की तकदीर बदलने के लिए काम शुरू किया। पहाड़ी क्षेत्र में प्राकृतिक जलस्त्रोतों के संरक्षण के साथ खातरियां, कुंए व बावड़ियों को भी बनाया जाने लगा।

इस मुहिम को जलजीवन मिशन के तहत नए नल कनेक्शन देने के साथ पाइपलाइन भी बिछाई गईं। इसके अलावा यहां पंचायत ने मनरेगा की मदद से कार्य कराया जिसमें स्थानीय लोगों ने भी योगदान किया जिससे 100 से ज्यादा खातरियां तैयार की गईं।

हमीरपुर के बमसन खंड की बारीं पंचायत में बनाई जा रहीं नई खातरियां • जागरण

वर्षा के जल को संग्रहित करने के लिए अलग से टैंक तैयार किए गए। इस मुहिम का असर अब गांव पर दिखता है। यहां पेयजल की समस्या दूर हो गई है। जल संरक्षण के लिए पंचायत ने जो प्रयास किए वह अब दूसरों के लिए मिसाल बन रहे हैं। पेयजल की समस्या दूर होने का असर गांव की खुशहाली में साफ दिखता है।

जल संकट दूर करने में खातरियां बनी सहारा: खातरी पहाड़ी के निचले हिस्से में पथरीली जमीन (चट्टान) को खोदकर 10 बाई 12 फीट का गड्ढा कर बनाई जाती है। खातरी का मुंह काफी संकरा होता है और फिर उसे बंद भी किया जा सकता है, ताकि उसमें गंदगी न जा सके। इसमें 30,000-50,000 लीटर तक पानी एकत्रित किया जा सकता है। इसे बनाने में 50 से 75 हजार रुपये की लागत आती है। सिकांदर पंचायत में सरकार ने इसके लिए वित्तीय सहायता भी दी है।

खातरियां सैंकड़ों साल पुरानी व्यवस्था है। इनमें जमा बारिश के पानी को गर्मियों में पीने से लेकर दूसरे काम में इस्तेमाल किया जाता है। सिकांदर पंचायत में पेयजल की समस्या को दूर करने के लिए हुआ यह कार्य अब आसपास की पंचायतों के लिए भी नजीर बन गया है। मंडी जिले के संधोल, टीहरा, गद्दीधार, समौर, सकलाना व कमलाह पंचायतों में भी 250 से ज्यादा परिवार खातरियों का पानी पीते हैं। ऐसे में यही खातरियां अब जल संकट को दूर करने में सबसे कारगर भूमिका निभा रही हैं। इसीलिए इन्हें बनाने पर अन्य पंचायतें भी ध्यान दे रहीं हैं।

सिकांदर पंचायत को राष्ट्रपति करेंगी सम्मानित

हमीरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 17 किलोमीटर दूरी पर स्थित सिकांदर पंचायत का गठन वर्ष 1973 में हुआ था। अब 11 दिसंबर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु पंचायत को जल संरक्षण को लेकर किए गए उसके कार्यों के लिए दिल्ली में सम्मानित करेंगी। पंचायत को 75 लाख रुपये का पुरस्कार मिलेगा। पेयजल की समस्या को दूर करने के इस पंचायत के माडल को छह नवंबर 2024 को शिमला में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने भी पुरस्कृत किया है। सिकांदर पंचायत में पांच वार्ड हैं। इसकी जनसंख्या 1,673 है।

तैयार खातरियां • जागरण

पंचायत ने पेयजल की समस्या को दूर करने के लिए सरकारी मदद और लोगों की भागीदारी के साथ खादरियां, कुंए और बावड़ियों का निर्माण कराया है। राष्ट्रपति के द्वारा मिलने वाली 75 लाख रुपये की पुरस्कार राशि को भी पंचायत में विकास कार्यों पर ही खर्च किया जाएगा।

पवन शर्मा, प्रधान, सिकांदर पंचायत

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।